"लॉकडाउन का इन्सानों, पर्यावरण और जानवरों पर प्रभाव"

लॉकडाउन एक ऐसी आपातकालीन स्थिति को कहते हैं जब आप घर से बाहर नहीं जा सकते। यह भी जरूरी नहीं कि आप घर पर ही हों अर्थात, जहाँ भी हों, इसके लागू होने के बाद आप कहीं बाहर नहीं जा सकते। और यही लॉकडाउन में जब वृहद स्थिति पर होता है तो यह कर्फ्यू का रूप ले लेता है।

भारत में ऐसी स्थिति पहली बार देखी गई है, जब पूरा देश बंद हो। लोग हैं पर सड़कों पर सन्नाटा पसरा है, नुक्कड़ पर अब भीड़ नहीं लगती और चाय की दुकानों पर अब लोग गप नहीं मारते। अगर कुछ है तो सन्नाटा और सन्नाटे को चीरती हुई पुलिस की गाड़ियों के सायरन। कुछ ऐसा आलम है इस लॉकडाउन का। यह एक प्रकार की आपातकालीन स्थिति है जिसका सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था पर देखने को मिल सकता है।

• क्यों किया गया लॉकडाउन ?

भारत के साथ-साथ दुनिया के कई अन्य देशों में लॉकडाउन अपनाया गया। यह इसलिए ताकि देश की जनता को कोरोना (COVID-19) नामक भयंकर महामारी के संक्रमण से बचाया जा सके। आलम ऐसा है कि दुनिया का हर देश कोरोना से बेहाल है। इसका संक्रमण भी बहुत तेज़ी से फैलता जा रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि इसका उद्गम

Scanned by CamScanner

स्थल चीन का वुहान शहर है। इटली और स्पेन जैसे देश जिनकी मेडिकल स्थिति दुनिया में बेहतरीन मानी जाती है, जब ऐसे देशों ने अपने हाथ खड़े कर दिए तो भारत तो अभी बहुत पीछे है। वहाँ जैसी स्थिति भारत में न आये इस लिए भारत सरकार ने लॉकडाउन की घोषणा की। लोगों को घर में रहने की हिदायत दी जा रही है, चारों ओर संकट का माहौल है। इसकी वैक्सीन की खोज अब तक जारी है, अगर हमारे हाथ में कुछ है तो वो बस घर में रहना और लोगों से दूरी बनाए रखना। लॉकडाउन की स्थिति में सभी प्रकार परिवहन (वायु, जल और स्थल) बंद कर दिए गए, सभी दुकानें, फैक्ट्रियां, कंपनियाँ आदि सब बंद हैं।

• लॉकडाउन के प्रभाव -

→ पर्यावरण पर प्रभाव :- लॉकडाउन से हमारी प्रकृति को जैसे नया जीवन मिल गया हो और प्रदूषण का स्तर भी बहुत कम हुआ है। हर समय धुएं से काला रहने वाला दिल्ली जैसे महानगरों का आसमान नीला दिखाई देने लगा है और रात को तारे चमकने लगे हैं। पिछले कुछ दिनों में वायु गुणवत्ता में बहुत सुधार हुआ है, एयर क्वालिटी इंडेक्स (AQI) में ज़बरदस्त गिरावट देखने को मिली है। चार दशक के बाद जालंधर से हिमालय की बर्फीली चोटियों के दृश्य ने रोमांचित कर दिया है। लॉकडाउन की वजह से दिल्ली एनसीआर में

Scanned by CamScanner

यमुना के किनारे बने शहरों के कल-कारखानों के बंद होने से उनका कचरा और गंदा पानी यमुना में नहीं जा रहा लिहाजा यमुना का जल साफ़ दिखाई दे रहा है। यमुना की तरह कानपुर तथा वाराणसी में गंगा के प्रदूषण स्तर में भी महत्वपूर्ण सुधार आया है।
दरअसल, कोरोना जैसे वायरस का आक्रमण भी प्रकृति का संतुलन बिगड़ने से हुआ है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में आज पूरी दुनिया ने प्रकृति का बेशुमार दोहन किया है। पर्यावरण के जानकर कह रहे हैं कि चीन में जंगली जानवरों को इन्सान ने अपना ग्रास बनाना शुरू कर दिया था जिसका परिणाम पूरा विश्व भोग रहा है। दुनियाभर के पर्यावरणविद और प्रकृति प्रेमियों का कहना है कि जिस तरह से लॉकडाउन के बाद सारी दुनिया में सकारात्मक प्रभाव देखे गए, उससे यह अनुभव सामने आया कि ठोस नीति बनाकर स्वेच्छा से अलग-अलग शहरों में साल में एक बार लॉकडाउन करके प्रकृति के संतुलन को साधा जा सकता है।

→ जानवरों पर प्रभाव :- लॉकडाउन के चलते जहाँ लोग अपने घरों में कैद हैं वहीं जंगली जानवर उन जगहों पर बेफिक्र विचरण कर रहे हैं, जो दरअसल उन्हीं की विरासत थी। नोएडा के सबसे व्यस्त समझे जाने वाले मॉल जीआईपी के सामने नील गाय और हिरण घूमते दिखाई दिए। ओखला पक्षी विहार में पक्षियों कलरव सुनाई देने लगा और एनसीआर के शहरों के पार्कों से

Scanned by CamScanner

गायब तोते और दूसरी चिड़ियों की आमद शुरू हो गई है। राजाजी नेशनल पार्क से आया हाथी हर की पौड़ी के नज़दीक गंगा में स्नान करता दिखा। प्रकृति का स्वछंद, निर्मल एवं मौन रूप देखकर जंगली जानवर भी शहरी इलाकों का आनंद ले रहे हैं।

→ इन्सानों पर प्रभाव :- लॉकडाउन ने लोगों की जीवन शैली पूरी तरह से बदल दी है। मानव जीवन में हुए इन बदलावों में कुछ नकारात्मक हैं तो कुछ सकारात्मक भी। इसमें सबसे बड़ा फायदा साफ़-सफाई को लेकर हुआ है। कोरोना वायरस ने लोगों को स्वच्छ रहने और अपने आसपास सफ़ाई रखने को मजबूर कर दिया है।

लॉकडाउन में लोगों को खूब समय मिल रहा है। कोई खाली समय में अपने पसंद की किताबें पढ़ रहा है तो कोई रचनात्मक कार्यों में मशगूल हो गया है। कुछ लोग घरों में रह कर ऑफिस का काम कर रहे हैं तो उनकी प्रोडक्टिविटी बढ़ गई है। छात्र अपना पूरा समय पढ़ाई को दे रहे हैं। ऐसे में ऑनलाइन क्लासेस का दौर भी खूब चल निकला है। वहीं, महिलाएं घर में रह कर नई-नई रेसिपी बना रही हैं। इसके साथ ही लोगों के जीवन में कुछ नकारात्मक प्रभाव भी पड़े हैं। घरों में खाली रहने की वजह से लोगों में तनाव पैदा हो रहा है। तनाव का एक बड़ा आर्थिक व सामाजिक चुनौतियां भी हैं।

Scanned by CamScanner

• निष्कर्ष – लॉकडाउन के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव हैं, परंतु उद्देश्य कोरोना से लड़ना और उसे हराना ही है। समस्या बड़ी हो तो उसकी रोकथाम भी वृहद होनी चाहिए और लॉकडाउन इसी का उदाहरण है।
घर पर रहें सुरक्षित रहें और कोरोना को हराएं एवं लॉकडाउन को सफल बनाएं।

– अंकिता

B. V.Sc – IV Prof. yr

V-2016-03-006

Scanned by CamScanner